RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-08
August-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत–नेपाल सम्बन्धः एक समीक्षा

एस0 सी0 श्रीवास्तव

रक्षा अध्ययन विभाग, जे0 पी0 पी0 जी0 कालेज, वाराणासी.–यू0पी0.–221302

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Aug 2019

Keywords
मित्रता एवं सहयोग, सन्धि, खतरा, शक्ति

***Corresponding Author**
Email: drsrivastava05[at]gmail.com

ABSTRACT

हिमालय की गोद में बसा नेपाल भारत और चीन के बीच स्थित है। इसकी उत्तर की सीमा तिब्बत से मिलती है तथा इसकी पूर्व –पश्चिम व दक्षिण की पूरी सीमा भारत से मिलती है। यह एक हिमालयी राज्य है तथा इसकी जनसंख्या 1करोड़ से अधिक है। अतः इसे मध्यवर्ती देश **(BUFFER)** *कहा जा सकता है।भारत के साथ इसकी सीमा की लम्बाई 600 मील है। यह विश्व का एक मात्रा हिन्दू राज्य है जहा काफी समय तक राज तन्त्र बना रहा। यहॉ के नरेश अपने देश में "पंचायती व्यवस्था" को ही जनाधार मानते रहे है। नेपाल में पंचायत राज प्रणाली कुल मिलाकर राज तन्त्र के नियन्त्रण में ही कार्य करती रही।*

नेपाल की जनता 20साल से अधिक समय तक पंचायती राज में जीने की अभ्यस्त हो चुकी थी। सन् 1950 से पूर्व नेपाल में राणाशाही थी ,परन्तु भारत के सहयोग से ही इसका अन्त हुआ। 30 जुलाई 1950 को भारत एवं नेपाल के बीच "मित्रता एवं सहयोग" की एक सन्धि की गई। परन्तु सन् 1954 से सन् 1956 तक नेपाली कांग्रेस का रूख भारत विरोधी बना रहा। टंका प्रसाद आर्चाय के युग में ही नेपाल एवं चीन काफी करीब आगये। इन्ही के कार्यकाल में ही नेपाल एवं चीन के बीच तिब्बत के सम्बन्ध में एक सन्धि की गई। आर्चाय ने तो यहॉ तक कह डाला कि भारत नेपाल को अपने एक अनुयायी के रूप में परिवर्तित करने की योजनो बना रहा है। अक्टूबर 1956 डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने नेपाल की यात्रा की। वहॉ पर उन्होने यह स्पष्ट किया कि नेपाल में भारत की कोई क्षेत्रीय महत्वाकांझाये नही है तथा यदि नेपाल की सुरक्षा को कोई खतरा उपन्न होता है तो यह भारत की सुरक्षा के लिये भी उतना ही गम्भीर खतरा माना जायेगा।

1.प्रस्तावना

प्रधानमन्त्री श्री टंका प्रसाद आचार्य भारत भ्रमण पर सन् 1956 ई. के दिसम्बर महीने में आये लेकिन कोई ठोस परिणाम नही निकला।जुलाई सन् 1957 में नेपाल में नये प्रधानमन्त्री डा0 के0 आई0 सिंह हुये। उनका पहला उद्देश्य भारत के साथ मंत्री पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना था। लेकिन नेपाल मे आन्तरिक दबावों के कारण उन्हे अपने पद से त्याग पत्र देना पड़ा। तत्पश्चात सन् 1959 में नेपाल में वी0पी0 कोइराला के प्रधानमन्त्री बन जाने के बाद भी दोनों देशों के बीच सम्बन्धो में कोई विशेष प्रगति नही हुई। वही सन्1960 में नेपाल ने चीन के साथ"मित्रता एवं सहयोग" की एक सन्धि कर ली। परिणाम स्वरूप 1961में नेपाल एवं भारत के बीच सम्बन्ध तनाव पूर्व हो गये।यही नही नेपाल के महाराजा महेन्द्र ने चीन एवं पाकिस्तान के साथ अपने सम्बन्धों को और बढ़ाना आरम्भ कर दिया। और अन्ततः उन्होने चीन को सन् 1961 में काठमान्डू।

Fig.1Chinese Foreign Minister Chen Yi meeting with King Mahendra in 1961

ल्हासा राज मार्ग निर्मित करने की अनुमति प्रदान कर दी। सन्1962 में भारत–चीन युध्द के समय नेपाल के साथ भारत के बहुत अच्छे सम्बन्ध नही थे। इस युध्द में नेपाल तटस्थ बना रहा। परन्तु इस युध्द से उसकी ऑखे खुल गयी। उसने चीन के प्रति अपनी अन्धविश्वास की नीति का परित्याग कर दिया। तत्पश्चात नेपाल ने भारत के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो को बनाये रखने की नीति को ही उचित माना। भारत के प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री, एवं राष्ट्रपति राधा कृष्णन की नेपाल यात्रा एवं 1956 में नेपाल नरेश की भारत यात्रा के फलस्वरूप आपसी सम्बन्धो में थोड़ी निकटता आयी। श्रीमती इन्दिरा गाँधी के कार्य काल में भारत–नेपाल सम्बन्धो में और मजबूती आयी।

परन्तु नेपाल के करीबी देश चीन को भारत–नेपाल सम्बन्ध कुछ गले के नीचे नही उतर रहा था। वह तो इन दोनो के बीच सदा तनाव पूर्ण स्थिति को बनाये रखना चाहता था।इसी दौरान भारत –नेपाल सीमा पर"सिस्ता"जैसे छोटे से क्षेत्र को लेकर दोनो देशो के बीच विवाद खड़ा हो गया। तथा कोसी नहर विवाद ने आग में घी का काम किया। नेपाल ने भारत– नेपाल सीमा का पुनः मुल्यांकन करने का मुद्दा उठायाऔर उसने नेपाल से भारतीय तकनीशियनो को वापस बुलाने एवं भारतीय सैनिक चौकियों को समाप्त कर देने की भी मांग की। भारत ने भी1970 में अपने तकनीशियनो एवं सैनिको को वापस बुला लिया। इसका दुष्परिणाम यह रहा कि 1970 में भारत–नेपाल व्यापारिक समझौता का नवीनीकरण नही हो

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सका। नेपाल भारत के विरूद्ध प्रचार करता रहा। अन्ततः भारत को कड़ा रूख नेपाल के खिलाफ उठाना पड़ा।

Fig.2 Nepal Floods: Kosi Flowing Over Danger Level

Fig.3 Gandak Barrage Nepal

सन् 1971 में स्वयं महाराजा महेन्द्र भारत आये जिससे गलत फहमियो को काफी हद तक दूर किया जा सका। सन् 1971 के भारत–पाक युद्ध के समय नेपाल तटस्थ बना रहा, परन्तु वास्तव में उसकी सहानुभूति भारत के साथ थी। अक्टूबर 1971 में दोनों देशों के बीच कोसी–गण्डक परियोजना के निर्माण के लिये समझौता हुआ और नेपाली जनता के मन में यह भावना उपन्न हो गयी कि भारत वास्तव में उनका सच्चा मित्र है। राजा महेन्द्र के मृत्यु के पश्चात युवराज बीरेन्द्र नेपाल नरेश बनाये गये। फरवरी 1973 में इन्द्रिरा गाँधी ने नेपाल यात्रा की। सन्1975 में भारत के साथ सिक्किम के विलय के समय नेपाल से भारत के सम्बन्ध फिर तनाव पूर्ण हो गये। परन्तु स्थिति में तब सुधार हुआ जब नेपाल को यह समझ में आया कि नेपाल तथा सिक्किम की स्थितियों में बहुत अन्तर है। अक्टूबर 1975 मे महाराजा बीरेन्द्र भारतआये और भारत ने उन्हे यह आश्वासन दिया कि नेपाल की पंचवषीर्य योजना में भारत भरपूर सहयोग देगा। 1976 में प्रधानमंत्री तुलसी गिरि भारत आये और वे सम दूरी के सिद्धान्त को भारत के साथ लागू करने लगे परन्तु भारत ने यह तर्क दिया की नेपाल के साथ भारत के विशिष्ट सम्बन्ध है अतःसम दूरी केसिद्धान्त में भारत को बांधे। उसी समय इन्दिरा गाँधी ने भी यह स्पष्ट कर दिया कि यदि नेपाल भारत के साथ मित्रता पूर्ण सम्बन्ध रखना चाहता है तो उसका स्वागत है अन्यथा भारत जबरदस्ती नेपाल से सम्बन्ध बनाने इच्छुक नही है। उस समय प्रधानमंत्री तुलसी गिरि ने यह बयान दिया कि अब आगे भारत को नेपाल से कोई शिकायत नही मिलेगी।

SUNDAY STANDARD

India has open mind on Nepal's proposal for zone of peace: Vajpayee

Export policy to be modified: Dharia

Mishra's death: panel accepts Govt version

Decentralisation main task, says JP

Fig.4 Sunday Standard -July 17, 1977

सन् 1977 में जनता पार्टी के सत्तारूढ़ होने पर दोनों देशो के बीच आपसी सम्बन्धो कोऔर मैत्री पूर्ण बनाने का प्रयास किया गया, परन्तु कोईराला को मृत्यु दण्ड देने की घोषणा ने दोनो देशो के सम्बन्धो में दरार पैदा कर दी। इन्दिरा गाँधी के पुनः सत्तारूढ़ होने पर 1980 में भारत–नेपाल सम्बन्धों में और सुधार एवं सहयोग की उम्मीद जगी। दोनों देशों के बीच सन्1987 में ''व्यापार और पारगमन'' कीसन्धि हो गयी। परन्तु राजीव गाँधी के शासन काल में इसका नवीनीकरण न हो सका। अस्थायी समझौता दोनों देशों के बीच 1990 में हुआ। भारत–नेपाल की आर्थिक प्रगति में गहरी रूचि लेता रहा है। सन्1950 में भारत ने उसके विदेशी व्यापार को शुलभ कराने हेतु उससे एक समझौता भी किया। तत्पश्चात नेपाल को कलकत्ता बन्दरगॉह को उपयोग में लाने हेतु अनुमति प्रदान की गई।कोसी और त्रिशूली परियोजनाओं में भारत ने नेपाल को अपार धन राशि दी। इसके साथ–साथ भारत ने नेपाल में अनेको मार्गो का निमार्ण किया। बड़ी–बड़ी नदियों पर बॉध बनाकर सिचाई एवं बिजली पैदा करने वाली

अनेक परियोजनाओं के लिये भारत ने नेपाल को 300 करोड़ से अधिक की धन राशि दिया।

Fig.5 -1950 Indo-Nepal Treaty of Peace and Friendship

1986 ई. मे भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपतिज्ञानी जैल सिंह ने जुलाई माह में नेपाल की पाँच दिवसी यात्रा की। उन्होने नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में नेपाल के साथ भारत के युगो पुराने सम्बन्धों की चर्चा करते हुये यह कहा कि यह सम्बन्ध भूगोल,इतिहास ,धर्म ,संस्कृति, और रीति–रिवाज पर आधारित है। अतः यह वक्त की मांग है कि दोनों देश अपने छोटे–मोटे मतभेदो को भूलकर आपसी सहयोग हेतु आगे आए।

2.भट्टराई सरकार एवं भारत–नेपाल सम्बन्ध (1990)

1990के अप्रैल माह मे नेपालमे हुई लोकतान्त्रिक क्रान्ति के दो महत्वपूर्ण नतीजे सामने आये और दोनों ही भारत के लिये लाभकारी सिद्ध हुये। पहला तो यह कि इससे राजा बीरेन्द्र की दलविहिन पंचायती व्यवस्था के स्थान पर बहु–दलीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था की स्थापना और दूसरा यह कि नेपाल में श्री कृष्ण प्रसाद भट्टराई के नेतृत्व में लोकतान्त्रिक सरकार के गठन के साथ ही पिछले डेढ़ साल से तनाव पूर्ण भारत–नेपाल सम्बन्धों में पर्याप्त कमी आई।

Fig.6- K.P. Bhattarai's India visit puts an end to the differences that exist between traditional friends.

10 जून 1990 को अन्तरिम सरकार के प्रधानमंत्री श्री भट्टराई ने भारत की तीन दिवसीय यात्रा की और तत्कालीन प्रधानमंत्रीश्री वी0 पी0 सिंह के साथ दोनों ने संयुक्त ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये। यात्रा से पहले पूर्व सरकार द्वारा चीन से हथियारों की खरीद से सम्बन्धित एक समझौते को खत्म कर श्री भट्टराई सरकार ने भारत की मैत्री के प्रतिपूर्ण सम्मान प्रकट किया।तत पश्चात भारत ने भी नेपाल के साथ अपनी सीमा के सभी 22प्रवेश मार्ग और 15 पार गमन मार्गो को एक जुलाई 1990 से पूर्व की भॉति खोल दिया। इसके साथ–साथ भारत ने नेपाल की [Credit facility] को 25 करोड़ से बढ़ा कर 35 करोड़ कर दिया है। यह भी निर्णय लिया गया कि भारत–नेपाल से उन वस्तुओं पर मूल भूत शुल्क नही लगायेगा जिनके कम से कम 65%नेपाली वस्तुएंहो। इसके साथ–साथ कोयले और पेट्रोलियम की आपूर्ति को फिर से बहाल कर दिया गया। इसके बदले में नेपाल ने वर्क परमिट की व्यवस्था को समाप्त कर दिया। भारतीय वस्तुओं परसे भेदनकारी करो को हटा दिया गया और साथ ही भारतीयों पर से तमाम प्रतिबन्धों को हटा लिया।

फरवरी 1991में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर की नेपाल यात्रा से दोनों देशों के एक नये जीवन

RRIJM 2015, All Rights Reserved

एवं नयी स्फूर्ति का संचार हुआ। फरवरी1996 में नई दिल्ली में भारत–नेपाल महाकाली सन्धि पर दोनों देशों ने हस्ताक्षर किया। इस सन्धि के तहत 20 हजार करोड़ रूपयें की लागत से 6,400 मेगावाट बिजली देने वाली पंचेश्वर हाइंडिल पावर प्रोजेक्ट की स्थापना की जानी है। इस परियोजना में दोनों सरकार आधा–आधा पैसा लगायेगी। 1997 में श्री एच0डी0 देव गौड़ा की सरकार ने नेपाल के साथ वाणिज्य सन्धि की, जिससे नेपाल की औद्योगिक उन्नति का मार्ग खुल गया।

3.*एन0 डी0 ए0 सरकार में भारत–नेपाल सम्बन्ध*

भाजपा की गठबन्धन सरकार ने 1999 के गणतन्त्र–दिवस समारोहमें विशेष मेहमान के रूप में नेपाल नरेश बीरेन्द्र को आमन्त्रित करके उनके दिल में जगह बना ली। इसके साथ–साथ भारत–नेपाल संन्धि जो 5दिसम्बर 1998 को समाप्त हो गयी थी, वह एक समझौते 1999 के तहत पारगमन 2006 तक के लिये बढ़ा दी गयी है। इस सन्धिके तहत नेपाल अन्य देशों से व्यापार के लिये कोलकत्ता बन्दगाह का भी इस्तेमाल सात दिन तक कर सकेगा। इसके अतिरिक्त भारत–नेपाल अन्तरराष्ट्रीय सीमा पर नो मैन्स लैण्ड पर बढ़ रहे अतिक्रमण एवं अपराध को रोकने के लिये इस सरकार के कार्य काल में काफी कार्य किये गये। भारत–नेपाल सम्बन्धों की जड़े पाँचवे दशक के उस काल से है जब भारत ने नेपाल में राजतंत्र के अधिकारो की हाली और एक लोकतन्त्र की स्थापना में अपना पूरा सहयोग दिया था। राणा के सांमती और एकाधिकार शासन का अंत करने में भारत ने मुख्य भूमिका निभायी थी। भारत–नेपाल के आंतरिक मामलो में दखल देने में कितना सामर्थ्यवान है यह वहाँ (नेपाल)की जनता ने भी देखा। नेपाल ,चीन और भारत के बीच स्थित है और इस कारण उसके सामने कुछ कठिन परिस्थितियॉ आती है, इसलिये भारत को यह बात समझनी चाहिये। सन् 1962 के भारत–चीन युद्ध ने इन परिस्थितियों की जटिलता को और बढ़ा दिया क्योंकि नेपाल को लेकर भारत की नीतियों में यह संदेह बन गया कि चीन कही भारत के सीमावर्ती नेपाल और भूटान पर अपना सामरिक एवं राजनीतिक प्रभाव न बढ़ा ले। चीन के साथ नेपाल के राजनीतिक विशेषकर रक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ने से भारत की यह चिन्ता और बढ़ी। भारत कुछ अपनी सुरक्षा चिन्ताओं के कारण और कुछ अपने आर्थिक हितों की वजह से नेपाल की माँगों और आकांक्षाओं की पूर्ति नही कर सकता।

सन् 1999 में काठमाण्डू में आई0एस0आई0 द्वारा तैयार की गयी भारतीय विमान अपहरण योजना सफल हो जाने के बाद दोनों देशों के बीच जो तनाव पैदा हो गया था उसे दूर करने के लिये नेपाल के प्रधानमंत्री श्री गिरजा प्रसाद कोईराला भारत आये और उन्हे कुछ कामयाबी भी मिली। जून 2001 में पूरे राज वंश परिवार की हत्या कर दी गयी। इस हत्या कांड के बाद लगा कि भारत–नेपाल सम्बन्धों में भी फिर खटास पड़ जायेगी,लेकिन नये राजा ज्ञानेन्द्र ने अपनी चली आ रही पुरानी परम्पराओं का पालन करते हुये सम्बन्धों को एक नया आयाम दिया। पुनः 2001 में भारत के विदेश मंत्री एवं रक्षा मंत्री जसवंत सिंह नेपाल की यात्रा की और वहा के पूर्व प्रधन मंत्री एवं मौजूदा प्रधानमंत्री शेरबहादुर देउबा से मुलाकात की ।इन सभी नेताओं ने भारत–नेपाल सम्बन्धों को मजबूत बनाने का आश्वासन दिया।

नेपाल की एक मुख्य समस्या माओवाद की है वहामाओवादीयह नही चाहते कि भारत–नेपाल सम्बन्ध मजबूत रहे लेकिन भारत और नेपाल को इन निरर्थक अहमियत रखने वालो तत्वों को काई महत्व नही देना चाहिये।

FIG .7-SHRI GIRIJA PRASAD KOIRALA MEETING WITH DR. MANMOHAN SINGH

मई 2004 में सत्ता में आते ही श्री मनमोहन सिंह की सरकार ने यह स्पष्ट संकेत दिया कि भारत–नेपाल सम्बन्ध और प्रगाढ़ बनेगें 6–9जून 2006 को भारत की यात्रा पर प्रधानमंत्री कोइराला आये जिसको कारण दो देशों के बीच मैत्री सम्बन्ध और घनिष्ठ हुये और भारत ने नेपाल को 100 करोड़ रूपये आर्थिक सहयोग का पैकेज दिया। अन्ततोगत्वा 240 वर्षो से चली आरही राजशाही व्यवस्था माओवादिओं के एक लम्बे सघंर्ष एवं जन आन्दोलन के बाद 28 मई 2008 को समाप्त हो गई। नेपाल के नव निर्वाचित संविधान सभा ने अपनी पहली बैठक में प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोईराला द्वारा प्रस्तुत उस प्रस्ताव को एक मत पारित कर दिया जिसमें देश को धर्म निरपेक्ष संघीय लोक तांत्रिक गणराज्य धोषित किया गया। अब राष्ट्रपति देश का प्रमुख होगा किन्तु कार्य पालिका शक्तियाँ प्रधानमंत्री के हाथ में रहेगी। नेपाल का गणतंत्र दिवस प्रति वर्ष 28 मई को मनाने का निश्चय भी किया गया। भारत को किसी समय साम्राज्यवादी,विस्तारवादी,शोषणवादी,दादागिरी जैसे शब्दों से सम्बोधित करने वाले माओवादी नेता सन्2008 के सितम्बर महीने मे नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल उर्फ प्रचंड के रूप में भारत आये। दिल्ली यात्रा के दौरान प्रचंड ने ठीक वैसा ही व्यवहार किया जैसा एक प्रधानमंत्री दूसरे देश के प्रधानमंत्री के साथ करता है।प्रचंड ने 1950 की भारत–नेपाल संधि और 1954 की कोसी संधि पर पुनः विचार की भी बात की लेकिन बड़े सलीके से। उनके बात–चीत के दौरान किसी प्रकार की शर्त या जिद नही दिखाई दी। प्रचड़ ने इस यात्रा के दौरान भारत के प्रति काफी सम्मान एवं स्नेह प्रकट किया। सन्2009 में नेपाल के प्रधानमंत्री माधव कुमार की पाँच दिवसीय भारत यात्रा के दौरान भारत–नेपाल की 59 वर्ष पुरानी द्विपक्षीय शांति एवं मैत्री संधि कि पुनः समीक्षा की गई। नेपाल ने यह भी आश्वासन दिया वह भारत विरोधी किसी प्रकार की क्रियाकलाप के लिये अपनी जमीन का कभी उपयोग नही होने देगा। भारत–नेपाल के बीच सम्बन्धों को मजबूत करने के लिये भारत ने नेपाल की सड़कों के विस्तार एवं एक पालिटेक्निक कालेज के निर्माण के लिये 22 करोड़ की सहयोग धनराशि नेपाल को दी। इसके साथसाथ 320 करोड़

रूपये एक राष्ट्रीय पुलिस अकादमी की इमारत के लिये भी भारत ने नेपाल को दिया।

4.मोदी की सरकार एवं भारत–नेपाल सम्बन्ध

अपने युवा अवस्था से ही आर0एस0एस0 सेजुड़े नरेन्द्र मोदी भा0जा0पा0 के बैनर तले भारत के प्रधानमंत्री के पद की 26 मई को शपथ ली। प्रधानमंत्री के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता अपने पड़ोसी देशों से मधुर सम्बन्ध बनाना एवं भारत की सुरक्षा को सुदृढ़ करना था। भारत का प्राचीन मित्र एवं पड़ोसी देशी नेपाल सामरिक दृष्टि से भारत के लिये काफी महत्वपूर्ण है। श्री नरेन्द्र मोदी इन्ही बातो को दृष्टिगत रखते हुये भारत के प्रधान मंत्री के रूप में अपनी पहली नेपाल की यात्रा की उन्होने अपने शपथ ग्रहण समारोह में सत्रह साल बाद सभी–दक्षिण एशियाई देशो के प्रमुखों को आमंत्रित करके इस नीति की शुरूआत की। भूटान के बाद नेपाल उसका सार्क देश है, जिसकी मोदी ने यात्रा के दौरान सभी बिन्दुओं पर अपने विचार व्यक्त किये। बात चाहे नेपाल संसद को सम्बोधितकरने की रही हो या स्थानीय पशुपति मंदिर दर्शन की अथवा चारों तरफ जमीन से घिरे हिमालयी राज्य के लोगों तक पहुचने की,उन्होने अपनी बात अथवा संदेश अपने नेतृत्व के अनुकूल प्रभावी तरीके से प्रेषित किया। भारत–नेपाल सम्बन्ध जीवांत और रचनात्मक रहे है।

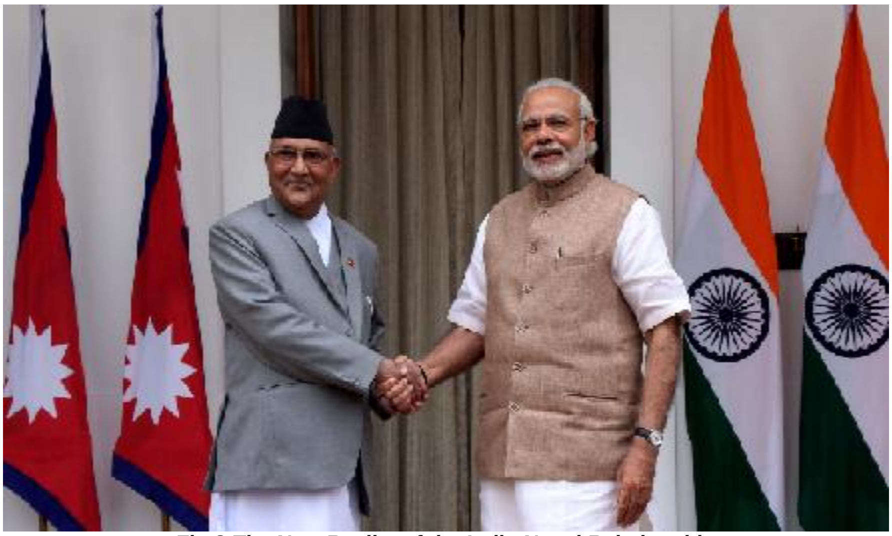

Fig.8-The New Reality of the India-Nepal Relationship

प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की यह पहली यात्रा काफी सफल रही।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नेपाल के लिये हिटशब्द का नया मंत्र दिया, जिसका मतलब हाईवे,इन्फॉर्मेशनवे और ट्रान्समिशनवे है। अपने सम्बोधन के दौरान उन्होने यह विश्वास दिलाया कि हिट के मंत्र से नेपाल को अवश्य लाभ होगा। किसी भी बड़े समझौते पर हस्ताक्षर नही होने के बावजूद प्रधानमंत्री ने अपने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि पूर्व की योजनओं परियोजओं को भी गति दी जाये और छः माह के भीतर उसके परिणाम दिखायी देने चाहिये। मोदी की यात्रा से 17 वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री श्री आई0 के0गुजराल साहब ने भी नेपाल की यात्रा की थी, लेकिन उस समय गुजराल साहब को अपेक्षाकृत कम राजनीतिक महत्व दिया गया था। नेपाल के लिये पिछला दशक काफी उथल–पुथल भरा रहा है। इसकी शुरूआत राजा वीरेन्द्र की दुखद हत्या से हुई और दीपेन्द्र2001 ये युवराज घोषित किये गये। इसके आलावा वहाँ लम्बे समय से माओंवादियोके बगावत का साया रहा और अंततः राज तंत्र का खात्मा हुआ। इसके बाद से 2008 में संविधान सभा का चुनाव हुआ, लेकिन सत्ता के कई केन्द्र उभर आएऔर नया नवेला लोकतन्त्र उथल–पुथल के दौर में उलझ गया। ऐसे समय में भारत ने एक भूल करते हुये सुरक्षा हितो का सवाल उठाया जिस कारण नेपाल को यह महसूस हुआ कि एक भारी–भरकम पड़ोसी देश उसके लिये समस्या है।

5.विचार

विगत 40 वर्षो से अधिक समय से विशिष्ट रिश्ता रखने के बावजूद भारत–नेपाल सम्बन्ध निचले स्तर पर ही बने रहे और इसमे कोई खास प्रगति नही हुई। सबसे खराब समय राजीव गाँधी का कार्य काल था, जबभारत ने बन्दरगाहों तक पहुच के मामले में कड़ा रूख अपनाया और पूर्व के समझौतो की व्याख्या करते हुये नियमों के उल्लंघन के लिये काठमांडू को चेताया। पूर्व के इस अविश्वास और संदेश को मोदी यात्रा ने कुछ हद तक दूर करने का काम किया है। द्विपझीय रिश्तों को बहाल करने की कुंजी अथवा सूत्र साझा आर्थिक भविष्य में निहित है और इसके लिये मोदी ने सही समय पर हिट का मंत्र दिया। ऐसे समय में जब चीन विभिन्न प्रकार की सम्पर्क परियोजनाओं के माध्यम से अपना प्रभाव बढ़ा रहा है तो भारत सड़क और साइबर सम्पर्क बढ़ाकर नेपाल से सम्बन्धों को मजबूत कर सकता है ।

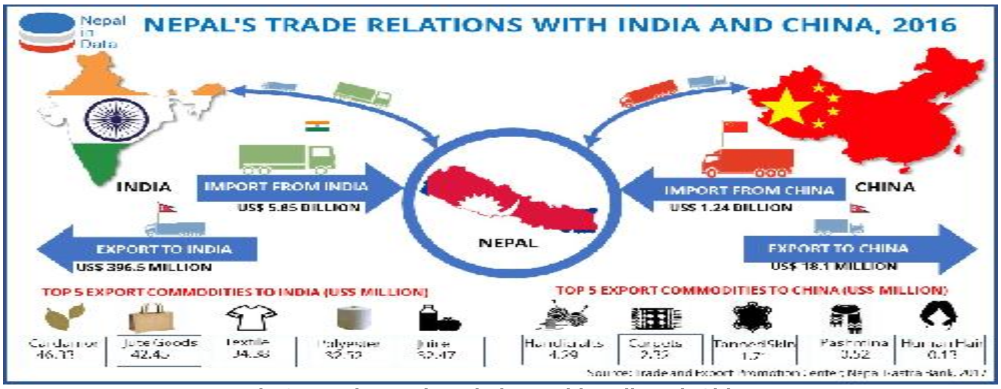

Fig.9-Nepal's Trade Relations with Indiaand China

इससे भारत,बीजिंग की तुलना में अलग–थलग नही पड़ेगा। इस तरह नेपाल,भारत–चीन,दोनों के लिये एक संभावना भरा क्षेत्र बन जाएगा।इससे छोटे पड़ोसी देशों के माध्यम से भारत के खिलाफ चीन की रणनीति को ध्वस्त किया जा सकेगा और उसका प्रभाव भी सीमित होगा। एक क्षेत्र जिसमें प्रगति संभव है वह है नेपाल का विशाल नदी संसाधन। दिल्ली के तमाम प्रयासों के बावजूद नेपाल भारत को जल विद्युत उत्पादन की अनुमति देने को लेकर संशकित दिखता है। तमाम आकड़े बताते है कि यदि नेपाल में उपलब्ध आधी जलविद्युत क्षमता का उपयोग किया जा सके तो इससे वार्षिक तौर पर तकरीबन 40 अरब डालर से अधिक का राजस्व अर्जित होगा। जिससे नेपाल न केवल अपने लोगो को बिजली दे सकेगा,बल्कि इसका निर्यात भी कर सकेगा।

6.निष्कर्ष

वर्तमान समय में नेपाल के 2 करोड़ 80लाख नागरिक निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर पर खड़े है यानी मानव विकास के संकेतो के मामले में उनकी स्थिति अच्छी नही है। वनों के कटाव के कारण वहाँ परिस्थितिकी संबधी चुनौतियो का संकट अधिक गहरा हुआ है। वहा गरीबों की बस्ती पर संसाधन के तौर परधनी देशों की नजर है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक अरब डालर राशि की मदद देकर यह संकेत दिया है कि भारत उसे प्रत्यक्ष तौर पर थोड़ा बहुत वित्तीय सहयोग दे सकता है, लेकिन साझा समृद्धि की राह पर बढ़ने के लिये नेपाली नेताओं की तरफ से भी पहल होनी चाहिये। पर्यटन,जलविद्युत एवं कृषि सम्बन्धी उद्योग के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाया जा सकता है। ऐसा होने पर नेपाल, भूटान और बंग्लादेश के साथ भी परस्पर सम्बन्ध बढ़ा सकता है। मोदी ने इन सभी संभावनाओं का संकेत दिया है, लेकिन चुनौती इन्हे अमल मे लाने की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा काठमांडू–नई दिल्ली बस सेवा से जहॉ पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा वही दोनो देशों के राजस्व में भी बढ़ोत्तरी होगी। इसके साथ साथ मोदी जी को ध्यान रखना होगा कि हमारे पड़ोस में एक धारणा प्रचलित है कि भारत वादे करता है और चीन परिणाम देता है। 17 वर्षो बाद काठमांडू और नई दिल्ली के बीच शीर्ष स्तरीय राजनीतिक सम्पर्क नई ऊचाई पर है और किये गये वादो पर अमल के लिये दोनो तरफ से काम होना चाहिये,अन्यथा यह चमत्कारिक मनोभूमि कटु अनुभव में बदल जायेगी और निराशा पुनः घर कर लेगी।

Reference

[1]. Srivastava J.M ,“Rashtriya Suraksha ki Avdharna”Chandra prakash and company, Hapur,Page 85.

[2]. The Times of India dailynews paper, Jan 23, 1984.

[3]. Laxmi Ram , Indo- Nepal economic times(New Delhi),24 September, 1978.

[4]. Singh Lallan Jee – Antar Rashtriya sambandho par yudh ka prabhav, PrakashBook Depo, Bareilly,1945.

[5]. Dainik Jagran dailynews paper- 4 Augast 2014.

[6]. Dainik Jagran daily news paper - 6 Augast 2014.

[7]. India and Nepal agree to start on kosi embankment, The Hindu (chennai) India 1 October2008.

[8]. Modi to address Nepal parliament, pray at Pashupatinath temple, News.biharprabha.com IANS, 25 July 2014.

[9]. Nepal and India’s National security by, Brig.U.C. Pant cited in suraksha.

[10]. India and his neighbours,page20 ,New Delhi-1984.

[11]. *National Security Advisory Board. Archived from the original on 27 February 2017.*

[12]. *Gupta, Arvind.* "Brajesh Mishra's Legacy to National Security and Diplomacy"*. Institute of Defence Studies and Analyses. Retrieved 21 April 2018.*

[13]. Website of the Embassy of India in Kathmandu: http://www.indianembassy.org.np.

[14]. Nepal chapter of MEA website http://mea.gov.in/indian-mission.htm?162

[15]. Facebook page: https://www.facebook.com/IndiaInNepal

[16]. Twitter account: www.twitter.com/IndiainNepal

[17]. YouTube channel: www.youtube.com/eoiktmnp

[18]. India Global: AIR FM Gold Program featuring India–Nepal Relations: https://www.youtube.com/watch?v=KAB65DkNj4Q